

1971

war

चरण 4

आत्मसमर्पण और बांग्लादेश का उदय

(16 दिसंबर 1971)

1971 के युद्ध का अंतिम चरण न केवल एक सैन्य विजय का प्रतीक था, बल्कि यह एक नए राष्ट्र के जन्म और एक मानवीय त्रासदी के अंत का भी प्रतीक था। भारतीय सशस्त्र बलों ने 13 दिनों के भीतर ही पाकिस्तानी सेना को पूरी तरह से हरा दिया, जिससे एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण आया जिसने दक्षिण एशिया के इतिहास को हमेशा के लिए बदल दिया।

ढाका का पतन: एक निराशाजनक स्थिति

दिसंबर 1971 के मध्य तक, पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना की स्थिति पूरी तरह से निराशाजनक हो चुकी थी। भारतीय सेना, अपनी उत्कृष्ट रणनीति और गति के साथ, चारों ओर से राजधानी ढाका की ओर बढ़ रही थी। पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियाँ अलग-थलग पड़ चुकी थीं, उनकी आपूर्ति श्रृंखला टूट चुकी थी, और उनका मनोबल पूरी तरह से गिर चुका था।

* **हवाई और नौसैनिक वर्चस्व:** भारतीय वायु सेना ने हवाई क्षेत्र पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था, जिससे पाकिस्तानी वायु सेना को कोई भी

हवाई सहायता देने का मौका नहीं मिला। इसी तरह, भारतीय नौसेना ने समुद्री नाकेबंदी कर रखी थी, जिससे बाहरी मदद पूरी तरह से बंद हो गई थी।

* **रणनीतिक घेराव:** भारतीय सेना की विभिन्न टुकड़ियाँ मुक्ति वाहिनी के साथ मिलकर, ढाका के बाहरी इलाकों में पहुँच चुकी थीं। मेजर जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के नेतृत्व में भारतीय सेना ने ढाका को चारों ओर से घेर लिया, जिससे पाकिस्तानी सेना के पास भागने या पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं बचा था।

* **मनोवैज्ञानिक दबाव:** भारतीय सेना के प्रमुख, जनरल सैम मानेकशॉ (जो बाद में फील्ड मार्शल बने), ने पाकिस्तानी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाज़ी को सीधे रेडियो पर संदेश भेजा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सेना की स्थिति निराशाजनक है और उनके सैनिकों की जान बचाने का एकमात्र तरीका आत्मसमर्पण है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि अगर वे आत्मसमर्पण करते हैं, तो उन्हें सम्मानपूर्वक व्यवहार मिलेगा, अन्यथा कोई गारंटी नहीं होगी। इस मनोवैज्ञानिक दबाव ने नियाज़ी और उनके कमांडरों को आत्मसमर्पण के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

नियाज़ी ने स्थिति की समीक्षा की। उनके पास न तो गोला-बारूद की पर्याप्त आपूर्ति थी और न ही कोई बाहरी मदद मिलने की उम्मीद थी। उनकी टुकड़ियाँ बिखरी हुई थीं और नागरिक आबादी के बीच पाकिस्तानी सेना के अत्याचारों को लेकर भारी गुस्सा था। उन्होंने यह भी महसूस किया कि अगर उन्होंने लड़ाई जारी रखी, तो और भी निर्दोष नागरिक मारे जाएँगे। आखिरकार, उन्होंने आत्मसमर्पण का कठिन फैसला लिया।

ऐतिहासिक आत्मसमर्पण: एक नए युग का सूत्रपात



16 दिसंबर 1971 को, ढाका में पाकिस्तानी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाज़ी ने भारतीय सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा को एक आत्मसमर्पण पत्र भेजा। आत्मसमर्पण का समारोह उसी दिन, दोपहर 4:31 बजे, ढाका के रेस कोर्स मैदान (जो अब सोहरावर्दी उद्यान है) में आयोजित किया गया।

* **हस्ताक्षर समारोह:** समारोह में हज़ारों की संख्या में बंगाली नागरिक मौजूद थे, जो अपनी आँखों के सामने पाकिस्तानी शासन का अंत होते देख रहे थे। नियाज़ी ने अपने रिवॉल्वर को अरोड़ा को सौंपा, और फिर दोनों कमांडरों ने आत्मसमर्पण के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किए। नियाज़ी के चेहरे पर हार की

हताशा साफ दिख रही थी, जबकि अरोड़ा ने विजय के बावजूद एक संयमित और सम्मानजनक व्यवहार बनाए रखा।

* **इतिहास का सबसे बड़ा आत्मसमर्पण**: इस ऐतिहासिक क्षण में, लगभग 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों ने अपने हथियार डाल दिए और भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। यह संख्या द्वितीय विश्व युद्ध के बाद किसी भी सैन्य बल द्वारा किया गया सबसे बड़ा सामूहिक आत्मसमर्पण था। इस आत्मसमर्पण के बाद, भारतीय सेना ने युद्धबंदी पाकिस्तानी सैनिकों के साथ जिनेवा कन्वेंशन के अनुसार सम्मानजनक व्यवहार किया। उन्हें भारत में युद्धबंदियों के रूप में रखा गया और बाद में शिमला समझौते के तहत उन्हें पाकिस्तान वापस भेज दिया गया।

बांग्लादेश का जन्म: एक मानवीय जीत

आत्मसमर्पण के तुरंत बाद, पूर्वी पाकिस्तान को पाकिस्तान के शासन से मुक्ति मिल गई। इस तरह, 'बांग्लादेश' नामक एक नए, संप्रभु राष्ट्र का उदय हुआ।

* **पहचान की जीत**: यह जीत केवल एक सैन्य जीत नहीं थी, बल्कि बंगाली लोगों की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान की जीत भी थी। यह उन लाखों लोगों की जीत थी जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए संघर्ष किया और बलिदान दिया।

* **मानवीय त्रासदी का अंत**: बांग्लादेश के जन्म के साथ, वहाँ चल रहा नरसंहार और मानवीय संकट समाप्त हो गया। लाखों शरणार्थी, जो भारत में रह रहे थे, अब अपने नए देश में वापस लौट सकते थे।